21.10.24

DATE
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दरोगा') भाग-2
पुस्तक- नवतरंग-7

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

आज हम पाठ-10 'नमक का दारोगा' का आगे का भाग पढ़ेंगे। सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-82 खोलकर रख लें और लिखित कार्य करने के लिए अभ्यास-पुस्तिका भी खोलें। मैं पाठ पढ़ाते समय आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। उनके उत्तर आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे जिसके लिए आप तीन मिनट का कालांश लेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस पाठ में पढ़ा था कि मुंशी वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन को हिरासत में में लेने का आदेश दिया था। जिसे सुनकर अलोपीदीन हड़बड़ा गए क्योंकि यह उनका पहला अनुभव था। आज वे अपने धन से एक ईमानदार व्यक्ति के ईमान-धर्म को नहीं खरीद सके। पंडित जी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। किंतु धन की शक्ति का उन्हें अभी तक भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले, "लालाजी, एक हज़ार के नोट बाबू साहब को भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।" यह बात सुनकर वंशीधर को बहुत क्रोध आया और वे उन्हें डाँटते हुए बोले, "एक हज़ार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।" धन और धर्म के बीच युद्ध छिड़ गया था। अलोपीदीन बार-बार मुंशी वंशीधर को खरीदने की कोशिश करते रहे लेकिन वंशीधर का धर्म वीरता के साथ पर्वत की भाँति अटल खड़ा था। अंत में पंडित अलोपीदीन निराश होकर बोले, "अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 21.10.24
PAGE No 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

अब आपको जो उचित लगे, करें। इसका आपको अधिकार है।" वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा कि पंडित जी को हथकड़ियाँ लगाओ। जैसे ही अलोपीदीन ने उसे अपनी तरफ़ आते देखा तो वे मूच्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। चारों ओर अलोपीदीन के इस व्यवहार की निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम पर बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी, बिना टिकट सफ़र करने वाले बाबू लोग, जाली कागज़ तैयार कराके ठगने वाले सेठ भी स्वयं की बुराइयों को न देखकर अलोपीदीन के बारे में बातें कर रहे थे।

बच्चो! यहाँ मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछ लेती हूँ। आप तीन मिनट का अंतराल लेकर प्रश्नोत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1. पंडित अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को अपने पक्ष में करने के लिए क्या किया?

प्रश्न-2. मुंशी वंशीधर को क्रोध क्यों आया? उन्होंने अलोपीदीन को क्या कहा?

प्रश्न-3. मुंशी जी ने अलोपीदीन को हिरासत में लेने को किसे कहा?

बच्चो! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं -

उत्तर-1. पंडित अलोपीदीन ने मुंशी जी को अपने पक्ष में करने के लिए उन्हें रिश्वत देने का भरसक प्रयास किया।

उत्तर-2. जब पंडित अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को पैसे देकर खरीदना चाहा तब उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने अलोपीदीन को कहा, "चालीस हज़ार तो क्या! चालीस लाख भी दोगे तब भी तुम मुझे खरीद नहीं पाओगे।"

उत्तर-3. वंशीधर ने अपने जमादार बदलूसिंह से पंडित अलोपीदीन

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य ('पाठ-10 नमक का दारोगा')

को हिरासत में लेने को कहा।

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ़ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई। अधिकारी, वकील, चपरासी, चौकीदार सब अलोपीदीन के गुलाम थे। सब हैरान थे कि वे कानून के पंजे में कैसे फँस गए! न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा कोई शस्त्र व बल नहीं था। न्यायालय में कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा होने के कारण मुकदमा अलोपीदीन के पक्ष में रहा। साथ ही डिप्टी मजिस्ट्रेट ने लिखा कि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है उन्हें अपने काम के प्रति भविष्य में सचेत और होशियार रहना चाहिए।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछ लेती हूँ। इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप 4 मिनट का समय लेंगे।

प्रश्न-1. अलोपीदीन को हाथों में हथकड़ियाँ किसने लगाईं और वे कहाँ ले जाए गए?

प्रश्न-2. सब लोग हैरान क्यों थे? युद्ध किसके बीच छिड़ा था?

प्रश्न-3. मजिस्ट्रेट ने मुंशी वंशीधर के विषय में क्या लिखा?

बच्चो! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:—

उत्तर-1 एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य ने अलोपीदीन को हथकड़ियाँ लगाईं और ये कांस्टेबल हथकड़ी लगे पंडित जी को अदालत की ओर लेकर गए।

उत्तर-2. पंडित अलोपीदीन अपने इलाके के प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। छोटे-बड़े सभी उनके कर्ज़दार थे। उन्हें अपने

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

21.10.24

DATE
PAGE No 4

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

धन पर गर्व था। जब उन्हें हथकड़ियाँ लगीं तो लोगों में शोर मच गया, ऐसा लोगों को लगने लगा कि संसार से अब पापी का पाप मिट (कट) गया। पंडितजी ने अपने धन से सबको खरीद रखा था। कानून के शिकंजे में अलोपीदीन के फँसने पर लोग हैरान थे। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया था।

उत्तर-3 डिप्टी मजिस्ट्रेट ने लिखा, 'यद्यपि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है। हम प्रसन्न हैं कि वे अपने काम में सचेत रहते हैं, किंतु भविष्य में उन्हें होशियार रहना चाहिए।'

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे।
अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य:-
सब बच्चे इस पाठ को उच्च स्वर में दो-तीन बार पढ़ेंगे व समझेंगे। मैं कुछ कठिन शब्दों के अर्थ लिखकर दे रही हूँ। सब बच्चे इन्हें याद करेंगे।
शब्दार्थ:-(क) निषेध - रोक, मनाही (ख) घूस - रिश्वत (ग) पौ-बारह - सब ओर से लाभ (घ) दारोगा - थानेदार (ङ) पद - ओहदा, नियत स्थान (च) प्रतिष्ठित - विराजमान (छ) तमंचा - छोटी देसी बंदूक (ज) कतार - पंक्ति, लाइन (झ) सन्नाटा - शांति (ञ) कानाफूसी - फुसफुसाहट, कान में धीरे से कुछ कहना (ट) ज़मींदार - ज़मीन का मालिक (ठ) ऋणी - कर्ज़दार (ड) डेले - ढेला (ढ) टटोला - छूकर देखा (ण) अखंड - पूरी तरह से।

शेष अगले सप्ताह - -.

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner